मेडिकल बोर्ड उनका चेकअप करेगा और उनके dependents को नौकरी दी जाएगी, तो उस मेडिकल बोर्ड को 7 साल से क्यों बंद रखा गया है, वह क्यों काम नहीं कर रहा है? पहले तो इसकी जांच होनी चाहिए और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए और जो लोग राष्ट्रपति जी को चिट्ठी लिखकर इच्छा मृत्यु की मांग कर चुके हैं, वे इस परिस्थिति में मरना चाहते हैं, उन लोगों की तकलीफों पर ध्यान दिया जाए और मेडिकल जांच कराकर उनके आश्रितों को अनुकम्पा नियुक्ति दी जाए, कोल इंडिया में नौकरी प्रदान की जाए, धन्यवाद।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by the hon. Member, Shri Sanjay Singh: Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Shri Haris Beeran (Kerala), Shri Sandosh Kumar P (Kerala), Dr. John Brittas (Kerala), Shri Prakash Chik Baraik (West Bengal), Ms. Dola Sen (West Bengal), Shri Khiru Mahto (Bihar), Shrimati Sagarika Ghose (West Bengal), Shri R. Girirajan (Tamil Nadu), Shrimati Jebi Mather Hisham (Kerala), Shri Ritabrata Banerjee (West Bengal), Shri Imran Pratapgarhi (Maharashtra), Shri M. Shanmugam (Tamil Nadu), Shri A.A. Rahim (Kerala), Shri Saket Gokhale (West Bengal), and Shrimati Renuka Chowdhury (Telangana).

Demand to include Lepcha, Bhutia and Limbu Language in the Eighth Schedule of the Constitution of India

SHRI DORJEE TSHERING LEPCHA (Sikkim): The Government of Sikkim, since its merger with the Union of India, has taken a bold step towards promotion of languages in the State. It is to place on record that the first democratically elected State Government had passed a historic Sikkim Official Languages Act, 1977 on 25th October 1977 and adopted Nepali, Bhutia and Lepcha Languages as the State Official Languages of Sikkim and, thereafter, Limbu language was also adopted as the Official State Language of Sikkim through the Sikkim Official Languages (Amendment) Act, 1981. Moreover, with the introduction of Lepcha, Bhutia and Limbu languages in the school curriculum in the State, this language has been further extended to the Post-Graduate courses and presently further extended to Ph.D. under Sikkim Central University. News bulletin in All India Radio, Gangtok, are being aired in these three languages. Similarly, Sikkim Herald, a weekly newsletter, is also being published in these languages edition through Information and Public Relations Department, Government of Sikkim. In addition, the Sikkim Legislative Assembly had also adopted the Resolution in the year 2008 for inclusion of Lepcha, Bhutia and Limbu languages in the Eighth Schedule of the Constitution of India.

With this background, I take this privilege to request the Government of India to kindly examine the proposal of the State Government for early inclusion of these three languages in the list of Eighth Schedule of the Constitution on top priority.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by the hon. Member, Shri Dorjee Tshering Lepcha: Shri R. Girirajan (Tamil Nadu), Shri Devendra Pratap Singh (Chhattisgarh), Shri Khiru Mahto (Bihar) and Shri Dhananjay Bhimrao Mahadik (Maharashtra).

Demand to include traditional kitchen tips for home remedies in education system of the country

डा. कल्पना सैनी (उत्तराखंड) : उपसभापति महोदय, मैं आपके समक्ष एक अत्यंत संवेदनशील और महत्वपूर्ण विषय प्रस्तुत करना चाहती हूं। यह विषय हमारे स्वास्थ्य, परंपरा और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से जुड़ा हुआ है। आज के आधुनिक दौर में हम अपने पारंपरिक रसोई नुस्खों को भूलते जा रहे हैं। हम छोटी-छोटी बीमारियों और तकलीफों के लिए दवाइयों पर निर्भर होते जा रहे हैं, जबकि हमारी भारतीय रसोई हमेशा प्राकृतिक औषधियों का खजाना रही है।

मान्यवर, हमारी रसोई में उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक मसाले केवल स्वाद बढ़ाने के लिए नहीं होते, बल्कि वे हमारे स्वास्थ्य के लिए संजीवनी का काम भी करते हैं। उदाहरण के रूप में हल्दी, अदरक और लहसुन प्राकृतिक एंटीबायोटिक हैं, जो शरीर को संक्रमण से बचाते हैं। मेथी, जीरा और धनिया में प्रचुर मात्रा में विटामिन, खनिज और फाइबर होते हैं, जो पाचन क्रिया को सुधारते हैं। हींग और अजवाइन पेट की समस्याओं का रामबाण इलाज है। लहसुन और दालचीनी हृदय को स्वस्थ रखने, कोलेस्ट्राल और रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक हैं।

उपसभापति महोदय, हम पारंपरिक नुस्खों को अपनाकर हम अपनी रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं, हृदय स्वास्थ्य के लिए बेहतर बना सकते हैं, डायबिटीज को नियंत्रित कर सकते हैं और मानसिक स्वास्थ्य को भी सुदृढ़ कर सकते हैं। ये नुस्खे हमें केवल स्वस्थ ही नहीं रखते, बल्कि पर्यावरण को संरक्षित करने में भी सहायक होते हैं, क्योंकि इनमें प्राकृति और जैविक सामग्री का उपयोग किया जाता है। अतः मेरा सदन के माध्यम से सरकार से यह आग्रह है कि परंपरागत रसोई नुस्खों को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाए, स्कूल्स और कॉलेजों में खाना पकाने के व्यावहारिक सत्र आयोजित किए जाएं और छात्र-छात्राओं को सिखाया जाए कि किस प्रकार पारंपरिक नुस्खों का उपयोग करके वे अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं। प्राकृतिक और जैविक खाद पदार्थों के महत्व को समझाने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।

उपसभापति महोदय, हमारे पूर्वजों ने हमें जो ज्ञान दिया है, उसे संरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। अगर हम अपने पारंपरिक मसालों और नुस्खों को शिक्षा का हिस्सा बनाएंगे, तो हम आने वाली पीढ़ियों को बीमारी से बचाने, उन्हें पोषण देने और मानसिक रूप से सशक्त बनाने में सफल होंगे। यह प्राकृतिक और टिकाऊ स्वास्थ्य की ओर एक क्रांतिकारी कदम होगा, धन्यवाद।